Peer Reviewed
ISSN (P) : 2321-290X ★ (E) 2349-980X
RNI No. : UPBIL/2013/55327

Srinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika

Peer Reviewed / Refereed Journal

VOL-6* ISSUE-7* (Part-2) March- 2019

Indexed with Google scholar

Impact Factor
SJIF = 5.921 (2018)
GIF = 0.543 (2015)
IIJIF = 6.038 (2018)

UGC S.NO. 40880 Shrinkhla UGC approved listed

The Research Series

द्विभाषीय - मासिक

Shrinkhala

श्रृंखला

A Multi-Disciplinary International Journal

Scanned with CamScanner

P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-7* (Part-2) March- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

16	एस. आर. हरनोट की कहानी 'जूजू' बोली है में बदलते नैतिक मूल्य गुरूप्रीत कौर एवम् सुरजीत सिंह, पंजाब, भारत	हिंदी	H-66	H-68
17	भगवानदास मोरवाल के कथा साहित्य में दलित परिवारों का स्वरूप अजायब सिंह एवम् ज्ञानी देवी, तलवंडी साबो, बठिंडा, भारत	हिंदी	H-69	H-74
18	21 वीं सदी में भारतीय विकास का सच और आदिवासी समाज मनोज कुमार, हरियाणा, उत्तर प्रदेश, भारत	हिंदी	H-75	H-77
19	प्रेमचंद की कहानियाँ संवेदना और शिल्प रेखा वर्मा, फतेहपुर, उ0प्र0, भारत	हिंदी	H-78	H-80
20	जनपद अम्बेडकरनगर (उ0प्र0) में भूमि उपयोग : एक भौगोलिक अध्ययन जगदेव एवम् गणेश कुमार, मुहम्मदाबाद, मऊ, भारत	भूगोल	H-81	H-84
21	ज्ञान के विभिन्न आयाम मणिमाला शर्मा, श्रीगंगानगर, राजस्थान, भारत	दर्शन शास्त्र	H-85	H-87
22	भारतीय अर्थव्यवस्था के बदलते वैश्विक परिदृश्य में अर्थव्यवस्था के वैश्विक कारकों की दशा एवं दिशा के संदर्भ में अध्ययन आशा शर्मा एवम् रतन लाल सुथार, राजस्थान, भारत	शिक्षक प्रशिक्षण	H-88	H-92
23	उत्तर वैदिक युगीन प्रादेशिक राज्य एवं शासन पद्धतियाँ प्रताप विजय कुमार, संत कबीर नगर, उ0प्र0, भारत	प्राचीन इतिहास	H-93	H-95
24	ग्रामीण पर्यटन के विकास में शिल्पकला का महत्व एवं योगदान (राजसमन्द जिले की मोलेला की मृण शिल्पकला के विशेष सन्दर्भ में) ज्योति आचार्य, भीलवाड़ा, राजस्थान, भारत	व्यावसायिक प्रशासन	H-96	H-100
25	मध्यप्रदेश की विशेष रूप से कमजोर जनजातीय समूह पर वृत्त चित्र निर्माण हरेन्द्र प्रताप सिंह चौहान, महू, इंदौर, म.प्र., भारत	प्रबंधन	H-101	H-108
26	मार्कण्डेय पुराण का शिक्षा–दर्शन सुनीता गौड, अनूपशहर, बुलन्दशहर, उत्तर प्रदेश, भारत	शिक्षा शास्त्र	H-109	H-112
27	केदारनाथ आपदा प्रभावित उच्च प्राथमिक विद्यालयों की स्थिति का अध्ययन शंकर सिंह एवम् रमा मैखुरी, श्रीनगर, गढ़वाल, उत्तराखण्ड, भारत	शिक्षा शास्त्र	H-113	H-120
28	बादरायण व्यास का संस्कृत साहित्य में प्रदान अनिल बी. माछी, गुजरात, भारत	संस्कृत	H-121	H-123
29	भारत वर्ष में पलायन पर चिन्तन का एक ऐतिहासिक अवलोकन दिनेश कुमार जैसाली, उत्तराखण्ड़, भारत	इतिहास	H-124	H-126
30	चीनी यात्रियों के यात्रा वृत्तांतों में उल्लिखित शूद्रों की दशा पर स्मृति एवं सूत्र ग्रंथों का प्रभाव : एक अध्ययन श्रीराम शर्मा, जयपुर, राजस्थान, भारत	इतिहास	H-127	H-131
31	निःशस्त्रीकरण हेतु अंतर्राष्ट्रीय प्रयास और भारत किरण फतेहपुरिया, लाडनूं, राजस्थान, भारत	राजनीति विज्ञान	H-132	H-137
32	प्रगाढ़ होते नेपाल–चीन सम्बन्ध : भारत के लिए उभरती चुनौती हिन्दुराम, जालोर, राजस्थान, भारत	राजनीति विज्ञान	H-138	H-141

Scanned with CamScanner

P: ISSN NO.: 2321-290X
E: ISSN NO.: 2349-980X
RNI : UPBIL/2013/55327
VOL-6* ISSUE-7* (Part-2) March- 2019
Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika

चीनी यात्रियों के यात्रा वृत्तांतों में उल्लिखित शूद्रों की दशा पर सूत्र साहित्य एवं स्मृति ग्रंथों का प्रभाव : एक अध्ययन

श्रीराम शर्मा
शोधार्थी,
इतिहास
इतिहास एवं भारतीय संस्कृति विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय,
जयपुर, राजस्थान, भारत

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र में प्राचीन भारत में यात्रा करने वाले चीनी यात्रियों द्वारा भारत में शूद्रों की दशा पर जो विवरण उपलब्ध कराया गया है, उस पर स्मृति एवं सूत्र ग्रंथों में उपबन्धित शूद्रों के कर्तव्य एवं विधि–निषेधों का कितना प्रभाव रहा, पर विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है। चीनी यात्रियों के भ्रमण के समय के गुप्त एवं हर्षकालीन भारत में शूद्रों को निम्नस्तरीय एवं संस्कारविहीन समझा जाता था। उनसे धार्मिक भेदभाव, राजनैतिक विभेद एवं नैतिक स्तर पर हीनता का व्यवहार किया जाता था। सूत्रों एवं स्मृतियों में उनकी जीविका को ऊँचे वर्णों की सेवा एवं शुश्रूषा पर निर्भर बताया गया है। सूत्रकारों की दंड व्यवस्था में भी उनका निम्न स्थान बताया गया है। न ही उन्हें राजनीतिक संगठनों में स्थान दिया गया। शूद्र शिक्षा भी नहीं प्राप्त कर सकते थे। इस प्रकार उपर्युक्त विवरण से दासों एवं शूद्रों से घृणा व नफरत करने के सामाजिक प्रचलन के बारे में ज्ञान होता है।

ह्वेनसांग एवं फाहियान नामक चीनी यात्रियों द्वारा प्रस्तुत विवरण भी सूत्र एवं स्मृति ग्रंथों का प्रतिबिम्ब प्रतीत होता है। ह्वेनसांग द्वारा शूद्रों को कृषक जाति का बताना, उन्हें अछूत समझना, फाहियान द्वारा उनका नगर के बाहर निवास, चलते समय लकड़िया बजाना आदि विवरण सूत्रों में उल्लिखित जीवन शैली पर ही प्रकाश डालता है। इत्सिंग भी उनके अपवित्र होने, स्पर्श होने पर दूसरे वर्णों द्वारा स्नान करके पवित्र होना एवं वस्त्र बदलने का विवरण देता है।

मुख्य शब्द : आपद्धर्म, शूद्र, स्मृति ग्रंथ, गृह्यसूत्र, चांडाल, प्रतिलोम, अनुलोम, काश्तकार, निषाद, वर्णव्यवस्था, स्वर्गीय देवता।

प्रस्तावना

चीनी यात्री फाहियान, ह्वेनसांग, इत्सिंग आदि ने भारत भ्रमण करते हुए महत्वपूर्ण विवरण उपलब्ध कराया है। फाहियान ने गुप्तकाल में 399 ईस्वी से 414 ईस्वी तक, ह्वेनसांग ने हर्षकाल में 629 ईस्वी से 644 ईस्वी तक तथा इत्सिंग ने सातवीं सदी के उत्तरार्द्ध में भारत की यात्रा की। इन्होंने भारत में शूद्रों की दशा का वर्णन किया है। स्मृति एवं सूत्रग्रंथों में शूद्रों सहित विभिन्न वर्णों के कर्त्तव्य, आपद्धर्म, निषेध, नियम, विनियम आदि का संकलन है जो प्राचीन भारत की सामाजिक व्यवस्था के आधार थे।

अध्ययन का उद्देश्य

मेरे इस शोधपत्र का उद्देश्य यह ज्ञात करना है कि क्या स्मृति एवं सूत्र ग्रंथों में वर्णित शूद्रों के कर्तव्य, आपद्धर्म तथा अन्य नियम–विनियम के अनुसार ही चीनी यात्रा वृत्तांतों में उल्लिखित शूद्र जीवन निर्वाह करते थे अथवा क्या गुप्तकालीन एवं हर्षकालीन शूद्रों का जीवन स्मृति एवं सूत्रकालीन शूद्रों के जीवन का प्रतिबिंब था। इस शोधपत्र का उद्देश्य यह पड़ताल करना भी है कि स्मृति एवं सूत्र ग्रंथों का प्रभाव भारतीय सामाजिक व्यवस्था में कितनी गहराई तक व्याप्त था।

साहित्यावलोकन

इस शोधपत्र के लिए जेम्स लेग्गे की पुस्तक – ए रिकॉर्ड ऑफ बुद्धिस्टिक किंगडम्स, सेम्युल बील की पुस्तक–बुद्धिस्टिक रिकॉर्ड ऑफ द वेस्टर्न वर्ल्ड, एच.ए. गाइल्स की पुस्तक – द ट्रेवल्स ऑफ फाहियान एण्ड रिकार्ड ऑफ बुद्धिस्टिक किंगडम्स, मनुस्मृति, बौधायन, आपस्तम्ब, गौतम धर्मसूत्र, बृहस्पति, विष्णु स्मृति जैसे प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों जिनमें शूद्रों की दशा का वर्णन है, आदि से सहायता ली गई। इस सम्बन्ध में रामशरण शर्मा ने भी शूद्रों का प्राचीन

Scanned with CamScanner